REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER – 2017

# गिरिराज किशोर: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

प्रा. भाऊसाहेब संपत गायकवाड
श्रीगोंदा माध्य व उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्रीगोंदा, तहसिल, श्रीगोंदा, जिला अहमदनगर, महाराष्ट्र.

***प्रस्तावना :***

समय प्रवाहमान है। समय की धारा में आवागमन नित्य चलता है। कई व्यक्तित्व पैदा होते हैं। लेकिन इस धारा में अपने जीवन कार्य से अपनी छाप अंकित करने वाले बहुत कम व्यक्तित्व होते हैं। ऐसे में एक सजग कथाकार का नाम आता है- गिरिराज किशोर। गिरिराज किशोर एक सर्जक साहित्यकार हैं। संपूर्ण जीवन में भविष्य के प्रति आस्था रखकर बीसवी शती के अंतिम चार दशकों से अनवरत लेखन-कार्य करनेवाले हिंदी के वे अग्रगण्य रचनाकार हैं।

## १. व्यक्तित्व परिचय -

गिरिराज किशोर का जन्म ८ जुलाई, १९३७ को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के मुज़फ्फरनगर के एक जमींदार परिवार में हुआ। गिरिराज किशोर का परिवार छोटा-सा है। पत्नी श्रीमती मीरा, दो बेटियाँ, श्रीमती जया, कु.शिवा और बेटा अतीश। जब वे डेढ़ वर्ष के थे तब उनकी माता का देहावसान हुआ था। अत: वे दादाजी की छत्र छाया में पले।

गिरिराज किशोर की माँ का नाम तारावती था। डेढ़ साल की छोटी सी उम्र में ही उनकी माता का देहावसान होने से वे मातृ-स्नेह से वंचित रहे। परिणामत: उनका लालन-पालन दादाजी ने किया। उनकी माता से परिचित लोग कहा करते थे कि उनकी माँ को गाने का बड़ा शौक था, लेकिन सामंती वातावरण में ब्याहे जाने के कार ण - सामंतों के मिजाजों तथा मान्यताओं के कारण उनकी कला निरर्थक रही। इस संदर्भ में स्वयं गिरिराज किशोर का कथन है- "जिन्होंने मेरी माँ को देखा है, वे कहते हैं, वह अच्छा गाना गाती थी। एक दकियानूसी ज़मींदार में ब्याहे जाने के कारण उस गाने की कोई सार्थकता नही हुई।"[१]

गिरिराज किशोर के पिता का नाम श्री सूरज प्रकाश था उनका देहावसान २८ जून, १९८८ को मुज़फ्फरनगर में हुआ।

## २. शिक्षा-दीक्षा -

गिरिराज किशोर का जन्म सामंती परिवार में हुआ था। सामंत स्वतंत्रता पूर्व काल में अंग्रेजों के भक्त थे। परिवार के लोग उर्दू, फारसी और अंग्रेजी से परिचित थे। इस वातावरण में गिरिराज किशोर को हिंदी लेखक बनने का मौका नही था। फिर भी उन्होंने अंग्रेजी, फारसी की बजाय हिंदी को चुना और उसका अध्ययन शुरू किया। इसे स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं- "In those times of the Hindi-Urdu conflict, I was the first in my family to study Hindi. Most of the people either studied Urdu or Persian or they studied English. My grandfather has studied English, Persian and Urdu, and so lad my father"[2]

गिरिराज किशोर ने अंग्रेजी या फारसी की बजाये पहले दर्जे से ही हिन्दी को चुना, घरवालों की इच्छा थी कि अंग्रेजी या फारसी लें।

गिरिराज किशोर ने बी.ए. तक की शिक्षा मुज़फ्फरनगर के स्थानिक महाविद्यालय से सन् १९५८ में आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से पास की। एम.एस.डब्ल्यू (मास्टर ऑफ सोशल वर्क) स्नातकोत्तर उपाधि, सामाजिक विज्ञान संस्थान, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा से सन् १९६० में पास की।

किशोरवस्था में ही उनकी रूचि, उपन्यास, कहानी पढ़ने की ओर थी। जिसका परिवार वालों ने विरोध किया, किन्तु वे छिप-छिपकर पढ़ते ही रहे। परिणामत: गिरिराज किशोर अपनी क्लास में कभी अच्छे विद्यार्थी नही रहे। उनकी यही रूचि किशोरावस्था से आज भी विद्यमान है।

**३. नौकरी-व्यवसाय -**

कोई भी मनुष्य किसी भी क्षेत्र में काम करता हो तो उसे अपने जीवन के लिए धन की चिन्ता रहती ही है। जमींदारी उन्मूलन के परिणामस्वरूप गिरिराज किशोर के परिवार को घोर आर्थिक संकट से गुजरना पड़ा था।

सन् १९६० में सोशल वर्क में स्नातकोत्तर उपाधि लेने के बाद वे एक फैक्ट्री में लेबर ऑफिसर के रूप में ज्वाइन हुए। यह नौकरी छूटने के बाद डेढ़ साल तक इलाहाबाद एम्प्लॉयमेन्ट ऑफिसर के रूप में कार्यरत रहे। कुछ कारणवश वहाँ से त्यागपत्र देना पड़ा। इसके बाद इलाहाबाद में ही प्रोबेशन ऑफिसर के पद पर नियुक्ति हुई। कुछ दिन बाद वह नौकरी भी चली गई। फिर कानपुर विश्वविद्यालय में असिस्टेंट रजिस्ट्रार तथा डिप्टी रजिस्ट्रार के रूप में सम्मान के पद पर नियुक्त हुए। उसके बाद उनकी इंडियन इंस्टिटयूट ऑफ टेक्नोलॉजी, कानपुर के रजिस्ट्रार पद पर नियुक्ति हुई, परंतु कुछ समय बाद वहाँ से तानाशाह निर्देशक ने उन्हें नौकरी से निलंबित किया। उन्ही के शब्दों में- "तानाशाह निर्देशक ने निलंबित कर दिया, पर मैं मानता हूँ कि सच्चाई मेरे साथ खड़ी है। सच्चाई में ठोकरें भी खानी पड़ती हैं और आदमी गिर-गिरकर उठने के अवसरों का धनी भी होता है।"[३]

सच्चाई के बल पर उन्होंने लड़ाई लड़ी। गिरिराज किशोर हायकोर्ट में मुकदमा जीत गये। उसके बाद आई.आई.टी. सेंटर फॉर क्रिएटिक राइटिंग एंड पब्लिकेशन, कानपुर के अध्यक्ष रहे। वहाँ से सन् १९७७ में सेवानिवृत्त होने के बाद संप्रति भारत-सरकार के संस्कृति मंत्रालय में स्वतंत्र लेखन एवं एमेरिटस फेलो के रूप में कार्यरत हैं।

गिरिराज किशोर सातवी-आठवी कक्षा से ही उपन्यास, कहानियाँ पढ़ने लगे थे। परिवार वालों का विरोध होते हुए भी उन्होंने छिप-छिपकर पढ़ना जारी रखा। उनके बाद मन पर अरिस्टॉटल, जॉन रास्केन, प्रेमचंद, शरत्चंद्र जैसे साहित्यकारों का प्रभाव रहा जिनसे प्रेरणा पाकर उन्होंने शुरू में कुछ कहानियाँ लिखी।

**४. महात्मा गांधी का प्रभाव-**

गिरिराज किशोर अपने लेखन साहित्य पर बचपन का प्रारंभिक प्रभाव छोड़कर अन्य किसी साहित्यकार के प्रभाव को स्वीकार नही करते परंतु उनपर गांधीवादी विचारधारा का जो प्रभाव पड़ा है, उसे वे स्वीकार करते हैं। उस प्रभाव के कारण ही उन्होंने महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रिका जीवन पर आधारित नौ सौ चार पृष्ठों का बृहद्काय उपन्यास 'पहला गिरिमिटिया' का प्रणयन किया है। उपन्यास लिखने के सिलसिले में ''उन्होंने दक्षिण अफ्रिका, इग्लैंड, मॉरीशस जैसे देशों की यात्राएँ भी की है। इसके अतिरिक्त जर्मनी, डेन्मार्क, त्रिनीदाद, अमेरिका आदि देशों की उन्होंने यात्राएँ की है।''[४] इसका तात्पर्य यह है कि गिरिराज किशोर का लेखन अनुभूति की सशक्त अभिव्यक्ति है।

**५. सम्मान तथा पुरस्कार-**

बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार गिरिराज किशोर का साहित्य प्राणवान है। उसमें विषयों की वैविध्यता, विचारों की निर्भयता और अभिव्यक्तिगत सक्षमता दिखाई देती है। सन १९५९ से आज तक की उनकी सेवा के लिये उन्हें लगभग चौदा पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इन में से - सन १९९२ का साहित्य अकादेमी पुरस्कार 'ढाई घर' उपन्यास के लिये।[५] के.के. बिडला फाउंडेशन द्वारा २००० का 'व्यास सम्मान' पहला गिरमिटीया उपन्यास के लिये।[६] राष्ट्रपति द्वारा २३ मार्च २००७ में साहित्य और शिक्षा के लिए 'पद्मश्री' से विभूषित।[७]

गिरिराज किशोर को प्राप्त सम्मान एवं पुरस्कारों से विदित होता है कि उनकी कर्मठता और सर्जनशिलता को देश-विदेश की प्रतिभाओं ने सम्मान की दृष्टि से देखा है।

निष्कर्ष रुप में यह कहा जा सकता है कि सत्य के आकांक्षी, अन्याय के विरुदध बेचैन, भविष्य के प्रति आस्थावान, संघर्षशील, लेखन को ही अपना जीवन मानने वाले, यथार्थवादी एवं बहुमुखी साहित्यकार गिरिराज किशोर का व्यक्तित्व समस्त हिंदी प्रेमियों के लिये प्रेरणादायी है।

**६. कृतित्व-** समकालीन हिंदी कथा साहित्य के बहुमुखी साहित्यकार के रूप में गिरिराज किशोर एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनका लेखन कार्य करीब चार दशक से अनवरत चल रहा है। उनका यह साहित्य वैविध्यपूर्ण है। साहित्य की लगभग

सभी विधाओं उपन्यास- १७, कहानी - १०, नाटक - ६, एकांकी - १, निबंध - ४, संस्मरण, डायरी, आलोचना आदि में अपनी लेखनी चलाई है। उनकी अब तक निम्नांकित रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जो इस प्रकार हैं

**७. अन्य-**

सन् १९५९ से आज तक उनकी लगभग चालीस पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। इसके अतिरिक्त जनसत्ता, दिनमान, नवभारत टाइम्स, इतवारी, दस्तावेज, हंस, अक्षरा, कल्पना, पूर्वग्रह, रविवार, समकालीन भारतीय साहित्य, साक्षात्कार, परिवर्तन, आजकल, राष्ट्रभाषा संदेश, सारिका, राष्ट्रभाषा धर्मयुग, प्रकर आदि अनेक पत्रिकाओं में उनकी कहानियाँ, उपन्यास, नाटक, निबंध, साक्षात्कार तथा अनेक वैचारिक लेख प्रकाशित हुए हैं।

गिरिराज किशोर समकालीन उपन्यासकार हैं। समकालीन उपन्यास साहित्य की कथ्य एवं शिल्पगत अनेक विशेषताएँ उनके उपन्यासों में विदयमान है। समकालीन उपन्यासकार परिवेश के प्रति अधिक जागरुक रहते हैं। वे अपने उपन्यासों में समकालीन स्थितियों का वास्तविक अंकन करते हैं। गिरिराज किशोर कानपुर के उच्च शिक्षा संस्थान से संबंधित रहे हैं। अपनी जीवनानुभूतियों को उन्होंने संपूर्ण यथार्थ के साथ चित्रित किया है। इस दृष्टि से उनके 'परिशिष्ट', 'यथा-प्रस्तावित', 'अंतर्ध्वंस', 'तीसरी सत्ता', 'यातनाघर' आदि उपन्यास उल्लेखनीय है।

'परिशिष्ट' उपन्यास के द्वारा गिरिराज किशोर ने अनुसूचित जाति के छात्रों को अपने पिछडेपन के कारण जिन अनेक त्रासद स्थितियों से गुजरना पडता है उसका अत्यंत जीवंत, प्रामाणिक चित्रण करते हैं। 'यथा-प्रस्तावित' उपन्यास में सवर्णों द्वारा पिछडी जाति के लोगों के शोषण का यथार्थ अंकन किया गया है। बरसों से शोषित एवं घृणित हरिजनों को अपने अधिकारों की माँग पर पाराविक यातणाएँ भुगतनी पडती हैं। 'यथा-प्रस्तावित' द्वारा यथार्थ अंकन किया है।

गिरिराज किशोर नारी स्वतंत्रता के समर्थक हैं। नारी जाति के प्रति उनके मन में पूरी सहानुभूति हैं। वे नारी की ओर सकारात्मक दृष्टि से देखते हैं। उनके दृष्टि से नारी अपनी अस्तित्व रक्षा के लिए लडना चाहती है। वह स्वाभिमानी बन कर जीना चाहती है। इस दृष्टि से 'दो' की नीमा, 'चिडियाघर' की मिसेस रिजवी, 'तीसरी-सत्ता' कि मिसेज शर्मा अवलोकनीय है।

गिरिराज किशोर के उपन्यासों की विषय वैविध्य एक विशेषता है। उन्होंने अलग-अलग विषयों पर नए तरीके से अलग-अलग उपन्यास लिखे हैं। उनके 'लोग', 'जुगलबंदी', 'ढाईघर' उपन्यास सामंतवाद जैसे पुराने विषय से संबंधित हैं लेकिन उसमें अंग्रेज परस्त सामतों की ढहती हुई स्थितियों को नए सिर से अभिव्यक्ति दी है। इससे स्पष्ट होता है कि सर्वथा नवीन विषय को लेकर लेखक ने अपने उपन्यासों का निर्माण किया है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व के विविध रूपों की तरह उनका साहित्य-संसार भी बड़ा व्यापक है। विविध आयामों को उजागर करनेवाला उनका यह रचना-संसार संख्यात्मक दृष्टि से ही नही बल्कि गुणात्मक दृष्टि से भी सराहनीय है। वे लेखन को भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने वाले साधन के रूप में स्वीकार करते हैं। निश्चय ही लेखन कार्य में अनवरत प्रयत्नशील रहनेवाले ऐसे महान साहित्यकार का व्यक्तित्व एवं उनका साहित्य हिंदी प्रेमियों के लिए प्रेरणादायी है।

**संदर्भ ग्रंथ -**

१. डॉ. साळुंके सुरेश चांगदेव - 'गिरिराज किशोर का उपन्यास साहित्य : एक अनुशीलन, पृ.सं. २००४, पृष्ठ - २०
२. Lothar Lutze - ' Hindi writing in the post colonical India' first publication 1985, pg. 142
३. बलराम - 'अपने-अपने पास', प्र.सं. १९८९, पृष्ठ - ३२
४. ज्ञानपीठ समाचार, मई १९९९, पृष्ठ - ४
५. वेबसाईट (साहित्य अकेडेमी ॲवार्ड : हिंदी) http:// meadev.nic.in/ culture/literature/awdhindi.htm (Culture Indian Literature Sahitya Acadamy, Awardees (HINDI) Page - 1
६. गिरिराज किशोर - 'ढाईघर' प्र.सं. २०११, आवरण पृष्ठ - दो
७. Giriraj Kishor Wikipedia.org Padma Awards Directory (1954-2009) (PDF) ¥ÖÌÆü ´ÖÓ¡ÖÖ»ÖµÖ, http://www.mha.nic.in/pdfs/LST-PDAWD.pdf अभिगमन तिथि : १५ मार्च २०१२.

प्रा. भाऊसाहेब संपत गायकवाड
श्रीगोंदा माध्य व उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्रीगोंदा, तहसिल, श्रीगोंदा, जिला अहमदनगर, महाराष्ट्र.